Publ. No.: DR/05/2020

शरदकालीन ईख के साथ मसाला एवं दलहनी फसलों से पाएं अतिरिक्त मुनाफा

डा0 नवनीत कुमार, डा0 गीता कुमारी,
डा0 अनिल कुमार, डा0 ललिता राणा
एवं डा0 ए0 के0 सिंह
ईख अनुसंधान संस्थान,
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर – 848 125

शरदकालीन ईख के साथ मसाला एवं दलहनी फसलों से पाएं अतिरिक्त मुनाफा

ईख अधिक दूरी पर कतारों में उगाई जाने वाली एक लम्बी अवधि की फसल है। ईख के साथ मुनाफा देने वाली कम अवधि (3–4 माह) की मसाला (धनिया एवं लहसुन) एवं दलहनी फसल राजमा का समायोजन कर लघु एवं सीमान्त ईख उत्पादक कृषकों का पोषण एवं आर्थिक सुरक्षा के साथ–साथ मृदा उर्वरता बढ़ाने, उत्पादन लागत कम करने, सूर्य प्रकाश का अधिकतम उपयोग एवं अंतः फसलों द्वारा प्राप्त आय से ईख हेतु उपादान खरीदने में मदद मिल सकती है। अन्तरवर्ती पद्धति में विभिन्न फसलों की जड़ें भूमि में अलग–अलग गहराई तक जाने के कारण जल तथा पोषक तत्वों का समुचित उपयोग होता है साथ ही वाष्पोत्सर्जन द्वारा भूमि से नमी का ह्रास कम हो जाता है जिससे पोषक तत्वों तथा जल उपयोग क्षमता में वृद्धि होती है।

शरदकालीन ईख की पैदावार वसंतकालीन ईख की तुलना में 20–25 प्रतिशत तथा चीनी का परता 0.5 प्रतिशत अधिक होने के बावजूद इसका क्षेत्रफल सीमित है। शरदकालीन ईख की प्रारंभिक अवस्था में कम तापमान के कारण ईख का वानस्पतिक विकास बहुत धीमी गति से होता है। इस समय रिक्त स्थानों में अन्तरवर्ती फसल उगाकर छोटे एवं सीमान्त किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ की जा सकती है। शरदकालीन ईख के साथ मसाला एवं दलहनी फसलों की खेती का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

ईख+राजमा : इस पद्धति में अक्टूबर के अंत तक ईख की रोपाई कर ली जाती है। ईख रोप के उपरांत दोनो पंक्ति ईख के बीच 30 से0 मी0 की दूरी पर दो पंक्ति राजमा (पी0 डी0 आर0 14 या उत्कर्ष) की बुआई की जाती है। राजमा का बीज दर 60–65 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखा जाता है। ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा में किए गए शोध के अनुरूप गन्ना में 150 किलोग्राम नेत्रजन, 85 किलोग्राम स्फूर एवं 60 किलोग्राम पोटाश का व्यवहार करना चाहिए। इसके साथ ही राजमा में 66 किलोग्राम नेत्रजन एवं 20 किलोग्राम पोटाश का राजमा के पंक्ति में ही व्यवहार करना चाहिए। गन्ना में पूरा स्फूर, पोटाश एवं आधा नेत्रजन रोप के समय तथा शेष बचे नेत्रजन का आधा मात्रा दो बार में प्रथम सिंचाई के समय एवं मिट्टी चढ़ाते समय व्यवहार करना चाहिए। राजमा के लिए आधा नेत्रजन एवं पूर्ण पोटाश का प्रयोग बुआई के समय तथा शेष बचे नेत्रजन का बराबर–बराबर मात्रा प्रथम सिंचाई एवं दूसरी सिंचाई के बाद देना चाहिए। राजमा की फलियाँ तोड़ने के बाद उसके अवशेष को मिट्टी में दबा देना चाहिए, इससे गन्ना को अतिरिक्त पोषक तत्वों की प्राप्ति होने के साथ–साथ मृदा के भौतिक दशा में भी सुधार होता है। सहफसली खेती में सिंचाई अन्तरवर्ती फसल के प्रकृति के अनुरूप हीं करना चाहिए। गन्ना + राजमा की खेती में प्रथम सिंचाई 45 दिनों बाद एवं दूसरी सिंचाई 75 दिनों बाद करनी चाहिए। सहफसल कटाई के बाद सिंचाई गन्ना के आवश्यकतानुसार करनी चाहिए। अनुसंधान में इस पद्धति द्वारा सहफसली खेती से गन्ना का उपज 824 क्विंटल एवं राजमा का उपज 9.5 क्विंटल प्राप्त हुआ है।

ईख+धनियाँ : ईख के साथ धनिया की खेती के लिए 15 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक ईख की रोप की जाती है। रोप के बाद दो पंक्ति ईख के मध्य 30–30 से0 मी0 की दूरी पर दो पंक्ति धनियॉ की बुआई की जाती है। इसके लिए राजेन्द्र स्वाती, पंत हरितिमा एवं स्थानीय

किस्मों का चयन कर सकते हैं। अन्तरवर्ती खेती हेतु धनियाँ का बीज दर लगभग 12–15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होता है।

धनियाँ के लिए अतिरिक्त 40 किलोग्राम नेत्रजन, 25 किलोग्राम स्फूर एवं 20 किलोग्राम पोटाश अनुशंसित है। जिसमें से 20 किलोग्राम नेत्रजन, सम्पूर्ण स्फूर एवं पोटाश बुआई के समय इस्तेमाल करना चाहिए। शेष बचे 20 किलोग्राम नेत्रजन का व्यवहार प्रथम सिंचाई के उपरान्त करना चाहिए। ईख + धनियाँ की सहफसली खेती में जब तक धनियाँ खेत में हो दो सिंचाई देना आवश्यक है। पहली सिंचाई 60 दिनों पर एवं दूसरी सिंचाई 90 दिनों पर देनी चाहिए। धनियाँ की कटाई के बाद ईख के आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। इस विधि द्वारा धनियॉ का उपज 10–12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो सकता है।

ईख+लहसुन : ईख के साथ लहसुन की अन्तरवर्ती खेती अधिक लाभप्रद पाया गया है। ईख एवं लहसुन साथ–साथ उगाने के लिए ईख को अक्टूबर के पहले सप्ताह में लगाया जाता है। ईख की दो पंक्तियों के बीच मे 30 से0 मी0 की दूरी पर दो पंक्ति लहसुन का लगाया जाता है इसके लिए लहसुन बादशाह एवं स्थानीय किस्मों का चयन कर सकते हैं। लहसुन का बीज दर 100–125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखा जाता है।

लहसुन के लिए 40 किलोग्राम नेत्रजन, 25 किलोग्राम स्फूर एवं 25 किलोग्राम पोटाश अनुशंसित है। उपरोक्त उर्वरकों की मात्रा में से सम्पूर्ण स्फूर एवं पोटाश तथा आधा नेत्रजन का वयवहार बुआई के समय करना चाहिए। आधा नेत्रजन (20 किग्रा0/हे0) का लहसुन में मिटट्री चढ़ाते समय उपरिवेशन करें। ईख के साथ लहसुन की सहफसली खेती में लहसुन की खुदाई से पहले तक तीन सिंचाई देना आवश्यक है। इसके लिए प्रथम सिंचाई 30 दिनों बाद, द्वितीय सिंचाई 60 दिनों बाद एवं तृतीय सिंचाई 90 दिनों बाद करनी चाहिए। लहसुन की खुदाई के बाद गन्ना के प्रकृति के अनुरूप सिंचाई करनी चाहिए। इस पद्धति में ईख को बिना किसी क्षति के 40–45 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक लहसुन का उपज प्राप्त होता है।

सिंचाई : ईख आधारित अन्तरवर्ती खेती में सिंचाई अन्तरवर्ती फसलों की आवश्यकता के अनुरूप करनी चाहिए परन्तु प्रथम सिंचाई ईख के अंकुरण के बाद ही करना चाहिए। अगर मिट्टी में नमी कम हो तो फसल लगाने के पहले सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

खरपतवार प्रबंधनः अन्तरवर्ती खेती में खर–पतवार का नियंत्रण सस्य क्रिया–विधि द्वारा होता है जो समय–समय पर निकाई–गुड़ाई के रूप में सम्पन्न की जाती है, लेकिन अति आवश्यक होने पर तृणनाशी रसायन का उपयोग किया जा सकता है जो दोनों के लिए हानिकारक नही हो।

कटाई एवं उपज : ईख के साथ बोए गए अन्तरवर्ती फसलों की कटाई ईख के कटाई से बहुत पहले हो जाती है, फलस्वरूप ईख के उपज में कोई कमी नहीं होती है, लेकिन अन्तरवर्ती फसलों का उपज पौधों या पंक्ति संख्या के अनुरुप प्राप्त होता है।

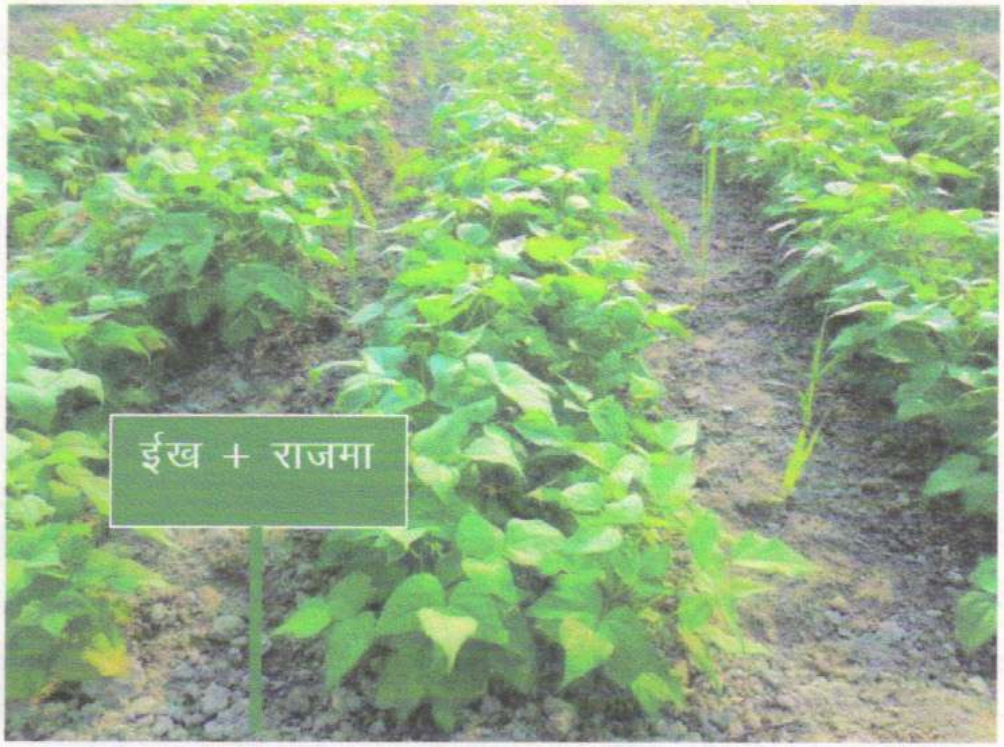

Technology released in 9th RCM (*Rabi*) 12-15 October, 2020